E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 8 | August 2025

लोकतांत्रिक भागीदारी और महिला सशक्तिकरण: छतरपुर विधानसभा क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं के मतदान रुझानों का विश्लेषण

गिरीश कुमार रैकवार [1], डॉ. संगीता मुखर्जी [2], डॉली पाण्डेय [3]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

[2] सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

[3] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, माधव राव सप्रे शासकीय महाविद्यालय पथरिया, दमोह, मध्य प्रदेश

सार:

आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि 2008 से 2013 के बीच मतदान प्रतिशत में गिरावट (60.4% से 48.8%) के बाद 2018 में इसमें उल्लेखनीय वृद्धि (71.07%) हुई, और 2023 में अनुमानित 73–75% तक पहुँच गया। राज्य स्तर पर 2023 में महिला मतदान प्रतिशत (71.14%) पुरुषों (71.19%) के बराबर हो गया, जो पिछले दो दशकों में आए सकारात्मक बदलाव का संकेत है। लाड़ली बहना योजना जैसी सरकारी कल्याणकारी नीतियों ने महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता और मतदान की प्रेरणा को बढ़ाया, जिसके परिणामस्वरूप लाभार्थियों में 1% वृद्धि से महिला मतदान में औसतन 0.04% की अतिरिक्त वृद्धि देखी गई। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि आर्थिक सहायता, शिक्षा एवं साक्षरता, महिला उम्मीदवारों की उपस्थिति और पंचायत स्तर पर आरक्षण ने महिलाओं की लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। छतरपुर जिले में हाशिए पर रहने वाली महिलाओं में 64.8% लाड़ली बहना योजना की लाभार्थी हैं और ऐसे क्षेत्रों में सत्ताधारी दल की सफलता दर 83.3% रही, जो सशक्तिकरण और राजनीतिक परिणामों के बीच मजबूत संबंध को रेखांकित करता है ।कुल मिलाकर, यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जब ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अवसर मिलते हैं, तो वे लोकतंत्र में समान और प्रभावी भागीदार बन जाती हैं। इस प्रकार, महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी न केवल सामाजिक न्याय बल्कि लोकतांत्रिक मजबूती का भी प्रतीक है।

कुंजीशब्द: महिला सशक्तिकरण, मतदान व्यवहार, ग्रामीण मतदाता, छतरपुर विधानसभा

परिचय:

मध्य प्रदेश का छतरपुर विधानसभा क्षेत्र, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है, ग्रामीण महिलाओं की चुनावी भागीदारी और सशक्तिकरण के बीच संबंधों की पड़ताल करने के लिए एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से, मध्य प्रदेश में महिलाओं के मतदान प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है 1962 में मात्र 29.01% से बढ़कर 2018 में 74.01% हो गई, जिसका मुख्य कारण लाड़ली बहना और लाड़ली लक्ष्मी जैसी लक्षित कल्याणकारी योजनाएँ हैं, जिन्होंने महिलाओं की नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। यह बढ़ता रुझान इस संभावना को रेखांकित करता है कि मतदान प्रतिशत में वृद्धि एक आँकड़े से कहीं अधिक है यह महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक भूमिका में गहरे बदलावों का संकेत दे सकता है।

छतरपुर पर विशेष ध्यान दें तो मतदाता मतदान में भी इसी तरह की वृद्धि हुई है: 2008 में 60.4% से बढ़कर 2013 में 66.9%, 2018 में 71.93% और 2023 के विधानसभा चुनावों में 73.28% तक पहुँच गया। हालाँकि निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर लिंग-आधारित मतदान सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है, ये आँकड़े बढ़ती समावेशिता और संभवतः

बेहतर महिला मतदान दरों का संकेत देते हैं, जो प्रक्रियात्मक प्रगति (जैसे मतदान तक आसान पहुँच) और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के बीच बढ़ी हुई नागरिक प्रेरणा दोनों को दर्शाता है।

जनसांख्यिकीय मोर्चे पर, मध्य प्रदेश लैंगिक असंतुलन से जूझ रहा है। छतरपुर जिले और पूरे बुंदेलखंड में, महिला साक्षरता और कार्यबल में भागीदारी राष्ट्रीय औसत से नीचे बनी हुई है, जबकि पितृसत्ता और जातिगत पदानुक्रम कायम हैं। निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर पंजीकृत मतदाताओं का लिंग अनुपात संरचनात्मक अंतरालों को इंगित करता है हालाँकि छतरपुर के लिए विशिष्ट मतदान केंद्र-स्तरीय लिंग अनुपात डेटा सीमित है, व्यापक क्षेत्रीय डेटा दर्शाता है कि पुरुष मतदाताओं की तुलना में महिला मतदाताओं का प्रतिनिधित्व कम है। ये संरचनात्मक असमानताएँ मतदान प्रतिशत बढ़ने के बावजूद, चुनावी एजेंसी पर संभावित बाधाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इस पृष्ठभूमि में, वर्तमान अध्ययन द्वितीयक स्रोतों चुनाव आयोग की रिपोर्ट, जनगणना के आंकड़े, एनएफएचएस/एनएसएस संकेतक और जिला सांख्यिकीय रिकॉर्ड का उपयोग करके यह जानने की कोशिश करता है: क्या छतरपुर में ग्रामीण महिलाओं के बीच अधिक मतदान ठोस सशक्तिकरण में तब्दील होता है? विशेष रूप से, यह शोधपत्र इस बात की पड़ताल करता है कि सामाजिक-आर्थिक कारक (जैसे साक्षरता और स्वयं सहायता समूह की उपस्थिति), संस्थागत पहुँच (पंजीकरण, मतदान केंद्र की निकटता), और राजनीतिक गतिशीलता (अभियान संदेश, स्थानीय विकास के मुद्दे) मतदान व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। आगामी विश्लेषण का उद्देश्य यह आकलन करना है कि क्या मतदान का कार्य व्यापक सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक बनता है या जड़ जमाए हुए लिंग संबंधी बाधाओं के भीतर एक प्रतीकात्मक संकेत बनकर रह जाता है।

साहित्य समीक्षा

ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर कई शोध बताते हैं कि भारत के लोकतंत्र में महिला मतदाता न केवल संख्या में बढ़ रही हैं, बल्कि उनके मतदान का स्वरूप भी अधिक स्वतंत्र और विवेकपूर्ण हो रहा है। सिंह (2015) के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ पारंपरिक रूप से पुरुष परिवारजनों के प्रभाव में मतदान करती थीं, परंतु पिछले एक दशक में उनमें राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है। इसके पीछे सरकारी योजनाओं, महिला आरक्षण, और शिक्षा का योगदान रहा है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के संदर्भ में, महिला मतदाताओं की संख्या में वृद्धि और उनका मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर आना, लोकतांत्रिक भागीदारी के संतुलन को दर्शाता है।

पूर्ववर्ती शोध (Verma, 2018; Sharma & Yadav, 2020) यह स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण महिला मतदाताओं के मतदान व्यवहार को सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार और आय का स्तर गहराई से प्रभावित करता है। गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाएँ अक्सर उन पार्टियों या उम्मीदवारों को प्राथमिकता देती हैं, जो तात्कालिक आर्थिक लाभ या कल्याणकारी योजनाएँ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में "लाड़ली लक्ष्मी" और हाल के वर्षों में "लाड़ली बहना योजना" ने महिलाओं के राजनीतिक रुझान पर सकारात्मक असर डाला है, जिससे वे सक्रिय रूप से मतदान केंद्र तक पहुँचने लगी हैं।

महिला सशक्तिकरण और मतदान व्यवहार के बीच प्रत्यक्ष संबंध कई अध्ययनों में सामने आया है। यादव एवं मिश्रा (2022) ने अपने शोध में पाया कि जब महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता या सरकारी सहायता प्राप्त होती है, तो उनकी राजनीतिक पहचान और निर्णय-क्षमता दोनों बढ़ती हैं। मध्य प्रदेश में लाड़ली बहना योजना के लागू होने के बाद महिला मतदाता संख्या और उनकी सक्रियता में वृद्धि दर्ज की गई। SBI रिसर्च (2023) के अनुसार, इस योजना के लाभार्थियों में 1% वृद्धि होने पर महिला मतदान में औसतन 0.04% की अतिरिक्त वृद्धि हुई। यह आंकड़े इस बात के प्रमाण हैं कि कल्याणकारी नीतियाँ केवल सामाजिक नहीं, बल्कि राजनीतिक सशक्तिकरण के भी साधन हैं।

छतरपुर विधानसभा क्षेत्र बुंदेलखंड के अंतर्गत आता है, जहाँ सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक रही है और महिलाओं की सार्वजनिक गतिविधियों में भागीदारी सीमित रही है। फिर भी, 2013 से 2018 के बीच यहाँ के महिला मतदान प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। यह बदलाव न केवल राज्यव्यापी योजनाओं का परिणाम है, बल्कि स्थानीय राजनीतिक अभियानों, महिला उम्मीदवारों की उपस्थिति, और पंचायत स्तर पर महिलाओं के आरक्षण का भी असर है। इन कारकों ने ग्रामीण महिलाओं को राजनीतिक विमर्श में शामिल किया और उन्हें स्वतंत्र मतदान निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया।

हालाँकि ग्रामीण महिलाओं के मतदान व्यवहार पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, लेकिन छतरपुर जैसे विशेष निर्वाचन क्षेत्रों में इस विषय पर केंद्रित अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं। अधिकांश उपलब्ध अध्ययन राज्य या राष्ट्रीय स्तर के रुझानों को उजागर करते हैं, जबकि स्थानीय स्तर पर विश्लेषण, विशेषकर किसी एक विधानसभा के संदर्भ में, कम किया गया है। इस शोध का उद्देश्य इस अंतर को भरना है यानी, छतरपुर विधानसभा में ग्रामीण महिलाओं के मतदान पैटर्न, उनके निर्धारकों, और महिला सशक्तिकरण के संकेतकों के बीच संबंध को स्पष्ट करना। इससे न केवल नीति-निर्माण में मदद मिलेगी, बल्कि यह भविष्य की राजनीतिक रणनीतियों और सामाजिक विकास योजनाओं के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. द्वितीयक आँकड़ों के स्रोतों का उपयोग करके छतरपुर विधानसभा क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं के मतदान व्यवहार के पैटर्न और निर्धारकों का विश्लेषण करना।
2. ग्रामीण महिलाओं की बढ़ती चुनावी भागीदारी और क्षेत्र में उनके सामाजिक-राजनीतिक सशक्तिकरण के संकेतकों के बीच संबंध का आकलन करना।

आकड़े और विश्लेषण:

ग्रामीण महिलाओं के मतदान व्यवहार के पैटर्न और निर्धारक

(क) मतदान पैटर्न

राज्य स्तरीय महिला-पुरुष मतदान तुलना (2023):

लिंग	मतदान प्रतिशत
महिला	71.14%
पुरुष	71.19%
Source: Times of India – Madhya Pradesh Assembly Elections Constituency Data	

डेटा (छतरपुर विधानसभा क्षेत्र):

- **2008**: 60.4% मतदान
- **2013**: 48.8% मतदान (काफी गिरावट)
- **2018**: 71.07% मतदान (महत्वपूर्ण वृद्धि)

- **2023**: अनुमानित 73–75% मतदान (राज्य औसत के आधार पर), महिला सहभागिता ~71%

यह दर्शाता है कि मध्य प्रदेश में महिलाओं का मतदान अब पुरुषों के लगभग बराबर हो गया है, जबकि 15–20 साल पहले महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से काफी कम रहती थी।

(ख) मतदान व्यवहार के निर्धारक

1. **सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ:**
    - **लाड़ली बहना योजना** ने महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता और मतदान की प्रेरणा को काफी बढ़ाया।
    - SBI रिसर्च के अनुसार, लाभार्थियों में 1% वृद्धि से महिला मतदान में औसतन **0.04%** अतिरिक्त वृद्धि दर्ज हुई।
2. **शिक्षा एवं साक्षरता:**
    - छतरपुर जिले की महिला साक्षरता दर (2011 जनगणना): **60.1%**, जो राष्ट्रीय औसत से कम है, लेकिन पिछले दो दशकों में इसमें सुधार हुआ है।
    - शिक्षित महिलाएँ मतदान में अधिक सक्रिय पाई गईं।
3. **स्थानीय राजनीतिक माहौल:**
    - महिला उम्मीदवार (जैसे 2013 में ललिता यादव और 2018 में अर्चना गुड्डू सिंह) के चुनाव लड़ने से महिला मतदाताओं की भागीदारी में बढ़ोतरी देखी गई।
4. **सामाजिक-सांस्कृतिक कारक:**
    - बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों में परंपरागत पितृसत्तात्मक सोच के बावजूद, पंचायत स्तर पर महिलाओं के आरक्षण ने राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई।

महिला भागीदारी और सामाजिक-राजनीतिक सशक्तिकरण का संबंध

(क) डेटा आधारित विश्लेषण:

संकेतक	**2018**	**2023**	**परिवर्तन**
महिला मतदान प्रतिशत (म.प्र.)	74.03%	76.03%	+2.0%
छतरपुर में हाशिए की महिलाओं में लाड़ली बहना लाभार्थी अनुपात	–	64.8%	–
लाभार्थी क्षेत्रों में सत्ताधारी पार्टी की सफलता दर	–	83.3%	–
Source: Newsclick – Assembly Polls MP Records 76.22% Voter Turnout			

सशक्तिकरण संकेतक:

- **आर्थिक सशक्तिकरण:** लाड़ली बहना योजना से महिलाओं को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता मिली, जिससे वे अधिक राजनीतिक रूप से सक्रिय हुईं।
- **सामाजिक पहचान:** पंचायत चुनावों में आरक्षण ने महिलाओं को नेतृत्व अनुभव दिया, जो विधानसभा चुनाव में भी वोटिंग निर्णयों में सक्रिय भागीदारी में बदल गया।
- **राजनीतिक जागरूकता:** सरकारी योजनाओं के प्रचार और महिला केंद्रित रैलियों ने ग्रामीण महिलाओं में नीति-निर्माण प्रक्रिया के प्रति रुचि बढ़ाई।

चर्चा:

छतरपुर विधानसभा क्षेत्र में 2008 से 2023 तक महिला मतदान व्यवहार में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। 2008 में कुल मतदान प्रतिशत 60.4% था, जो 2013 में घटकर 48.8% रह गया यह एक बड़ी गिरावट थी, जो संभवतः राजनीतिक असंतोष, मतदान केंद्र तक पहुँच की कठिनाइयों और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण हुई। हालांकि, 2018 में यह प्रतिशत बढ़कर 71.07% हो गया, जो महिलाओं में बढ़ती राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी का संकेत देता है। 2023 में राज्य औसत के आधार पर अनुमानित मतदान 73–75% रहा, जिसमें महिला सहभागिता लगभग 71% रही। राज्य स्तरीय आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अब महिला और पुरुष मतदान प्रतिशत लगभग बराबर है (महिला 71.14%, पुरुष 71.19%), जो पिछले 15–20 वर्षों में हुए सकारात्मक बदलाव का परिणाम है।

छतरपुर में महिला मतदाताओं के निर्णयों पर कई कारकों का प्रभाव पड़ता है। सबसे प्रमुख है सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ, जैसे लाड़ली बहना योजना, जिसने महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता और मतदान की प्रेरणा को बढ़ाया। SBI रिसर्च (2023) के अनुसार, लाभार्थियों में 1% वृद्धि होने पर महिला मतदान में औसतन 0.04% अतिरिक्त वृद्धि हुई। शिक्षा एवं साक्षरता भी अहम भूमिका निभाती है हालांकि 2011 की जनगणना के अनुसार छतरपुर की महिला साक्षरता दर 60.1% है, परंतु शिक्षित महिलाएँ मतदान में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय पाई गईं। इसके अलावा, स्थानीय राजनीतिक माहौल में महिला उम्मीदवारों की मौजूदगी (जैसे 2013 में ललिता यादव और 2018 में अर्चना गुड्डू सिंह) ने महिला मतदाताओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया।

बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों में पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के बावजूद, पंचायत चुनावों में महिलाओं के लिए आरक्षण ने राजनीतिक जागरूकता का मार्ग प्रशस्त किया। लाड़ली बहना योजना से प्राप्त आर्थिक सहायता ने महिलाओं की आर्थिक स्वायत्तता को मजबूत किया, जबकि पंचायत स्तर पर नेतृत्व अनुभव ने उनकी सामाजिक पहचान को बढ़ाया। इसके अलावा, सरकारी योजनाओं के प्रचार और महिला केंद्रित राजनीतिक अभियानों ने उनकी राजनीतिक जागरूकता को गहरा किया। 2023 के आंकड़े बताते हैं कि छतरपुर में हाशिए की महिलाओं में 64.8% इस योजना की लाभार्थी हैं और ऐसे क्षेत्रों में सत्ताधारी दल की सफलता दर 83.3% रही, जो सशक्तिकरण और राजनीतिक नतीजों के बीच मजबूत संबंध का संकेत है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, छतरपुर विधानसभा में ग्रामीण महिलाओं का मतदान व्यवहार समय के साथ काफी विकसित हुआ है। 2013 की गिरावट के बाद 2018 और 2023 में उनकी भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो शिक्षा, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, महिला उम्मीदवारों की मौजूदगी और सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता के संयोजन से संभव हुई। महिला मतदान अब पुरुषों के बराबर पहुँच चुका है, जो न केवल लोकतांत्रिक मजबूती का प्रतीक है, बल्कि यह

भी दर्शाता है कि जब महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अवसर दिए जाते हैं, तो वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया में समान और सक्रिय भागीदार बन जाती हैं।

संदर्भ सूची

1. टाइम्स ऑफ़ इंडिया। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव क्षेत्र: छतरपुर। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://timesofindia.indiatimes.com/elections/assembly-elections/madhya-pradesh/constituency-show/chhatarpur
2. न्यूज़क्लिक। (17 नवम्बर 2023)। विधानसभा चुनाव: मध्य प्रदेश में 76.22% मतदान दर्ज; विशेषज्ञों का कहना – उच्च मतदान परिवर्तन का संकेत हो सकता है। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://www.newsclick.in/assembly-polls-mp-records-7622-voter-turnout-experts-say-high-turnout-may-indicate-change
3. भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) अनुसंधान। (दिसम्बर 2023)। महिला सशक्तिकरण एवं लाड़ली बहना योजना। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://sbi.co.in/documents/13958/36530824/141223-Women%2BEmpowerment%2B%26%2BLadli%2BBehna_Dec23.pdf
4. भारत की जनगणना। (2011)। जिला जनगणना पुस्तिका – छतरपुर (श्रृंखला 23, भाग XII-A)। जनगणना संचालन निदेशालय, मध्य प्रदेश। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/521/download/1646/DH_2011_2303_PART_A_DCHB_CHHATARPUR.pdf
5. भारत निर्वाचन आयोग। (2023)। मध्य प्रदेश विधानसभा के सामान्य चुनाव पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://eci.gov.in/statistical-report/statistical-report-legislative-assembly-election-madhya-pradesh
6. वर्मा, आर। (2018)। ग्रामीण भारत में महिलाओं का मतदान व्यवहार: निर्धारकों और पैटर्न का अध्ययन। भारतीय राजनीति विज्ञान पत्रिका, 79(3), 413–425।
7. शर्मा, पी., एवं यादव, एस। (2020)। ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: मध्य प्रदेश से एक प्रायोगिक अध्ययन। ग्रामीण विकास पत्रिका, 39(1), 45–62।
8. सिंह, अ। (2015)। भारत में महिलाएँ और चुनावी राजनीति: रुझान और संभावनाएँ। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 50(7), 64–72।
9. यादव, म., एवं मिश्रा, एस। (2022)। कल्याणकारी योजनाएँ और महिला सशक्तिकरण: मध्य प्रदेश से प्रमाण। सामाजिक एवं आर्थिक विकास पत्रिका, 24(2), 345–362।
10. इग्नाइटेड माइंड्स। महिलाओं के मतदान व्यवहार: रुझानों और पैटर्न की समीक्षा। 14 अगस्त 2025 को प्राप्त, https://ignited.in/article/10795/voting-behaviour-of-women-a-review-of-trends-and-patterns